Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 5, April-2019, ISSN 2230-7540

केदारनाथ सिंह की कविता में सामाजिक यथार्थ

Renu Mittal*

Assistant Professor, RKSD College, Kaithal, Haryana

सार - *केदारनाथ सिंह के काव्य की सबसे बड़ी शक्ति नैतिकता के प्रति उनकी आस्था है। उनकी यह आस्था संसार को बेहतर बनाने के लिए संघर्ष करती रहती है। उनका मन सुंदर और मूल्यवान चीज़ों के प्रति आकर्षित होता है, जो उन्हें संसार को बेहतर बनाने की शक्ति प्रदान करता है। नंदकिशोर नवल लिखते हैं कि "जो कुछ भी सुंदर और मूल्यवान है, उसके प्रति उनके मन में अपार आकर्षण है और दुनिया को बेहतर बनाने वाली शक्ति के प्रति वे आशावान हैं।"2 कविता में यथार्थ का विशेष महत्व होता है। कवि ने इस बात को स्वीकार भी किया है- "वह ¼नेरुदा½ कहता है कविता रियालिस्टिक नहीं हो सकती, पर यथार्थ के बिना भी वह नहीं रह सकती। मुझे इस बात में काफी सार दिखायी पड़ता है। कविता अपने तत्व यथार्थ से ही लेती है। वह दोहरे स्तर पर यथार्थ से जुड़ती है। वह अभिव्यक्ति का उपकरण भी यथार्थ से ही लेती है और यथार्थ को ही व्यक्त करती है। यहाँ से दो बातें निलकती हैं कि कविता यथार्थ के बिना जीवित नहीं रह सकती और दूसरी ओर यथार्थवाद के अलावा वह एक खास तरह की विचार परंपरा से भी जुड़ी हो। उसे आवश्यक मुक्ति चाहिए, कवि के अनुभव के कारण वह रूप लेती है। इसलिए संसार के सारे कवि एक विचारधारा से प्रतिबद्ध रहते हुए भी एक जैसी कविता नहीं लिखते। स्वयं नेरुदा और ब्रेख़्त दोनों का शिल्प, विषय, भाषा आदि यानी कविता का पूरा ताना-बाना भिन्न है। इसलिए मैं यह मानता हूँ कि रचना का कहीं-न-कहीं एक ख़ास तरह की रचनात्मक मुक्ति से गहरा संबंध है और उसी मुक्ति में मेरा विश्वास है।*

----------X----------

प्रस्तावना

केदारनाथ सिंह का काव्य-सृजन बड़ा विराट है। उनकी काव्य-यात्रा चैथे दशक से आरंभ होती है, जिसमें व्यापकता के साथ-साथ विविधता भी दिखायी देती है। केदारनाथ सिंह का कवि हृदय समाज की हर छोटी-बड़ी समस्या के प्रति संवेदनशील दिखायी देता है। आरंभ में वे एक रोमांटिक कवि के रूप में दिखायी देते हैं, लेकिन समय के साथ-साथ उनके काव्य लेखन में भी बदलाव आता गया और उनकी कविता जनसामान्य से जुड़ती चली गयी। बिंब को अत्यधिक महत्व देने के कारण रूपवादी कवियों में भी उन्हें उच्च स्थान प्राप्त है। केदारनाथ सिंह के काव्य में भावभूमि और विचारभूमि के विविध रूप देखने को मिलते हैं। राष्ट्रीय और सामाजिक स्थिति तथा व्यवस्था के प्रति उनका मोहभंग उनकी कविताओं में मुख्य रूप से उभरकर सामने आता है। नंदकिशोर नवल इस ओर संकेत करते हुए लिखते हैं कि "ज़मीन पक रही है, की कविताएँ जिस चीज़ की तरफ़ हमारा ध्यान सर्वप्रथम आकृष्ट करती हैं, वह है इनमें पाई जाने वाली मोहभंग की स्थिति। अकेलापन, निराशा और संशय की अभिव्यक्ति कवि ने पहले भी की थी, जैसा कि हमने देखा है, लेकिन इस संग्रह की कविताओं में आकर तो पूरी सामाजिक-राष्ट्रीय स्थिति से उसका मोहभंग होता है।"[1] केदारनाथ सिंह के काव्य की सबसे बड़ी शक्ति नैतिकता के प्रति उनकी आस्था है। उनकी यह आस्था संसार को बेहतर बनाने के लिए संघर्ष करती रहती है। उनका मन सुंदर और मूल्यवान चीज़ों के प्रति आकर्षित होता है, जो उन्हें संसार को बेहतर बनाने की शक्ति प्रदान करता है। नंदकिशोर नवल लिखते हैं कि "जो कुछ भी सुंदर और मूल्यवान है, उसके प्रति उनके मन में अपार आकर्षण है और दुनिया को बेहतर बनाने वाली शक्ति के प्रति वे आशावान हैं। कविता में यथार्थ का विशेष महत्व होता है। कवि ने इस बात को स्वीकार भी किया है-"वह ¼नेरुदा½ कहता है कविता रियालिस्टिक नहीं हो सकती, पर यथार्थ के बिना भी वह नहीं रह सकती। मुझे इस बात में काफी सार दिखायी पड़ता है। कविता अपने तत्व यथार्थ से ही लेती है। वह दोहरे स्तर पर यथार्थ से जुड़ती है। वह अभिव्यक्ति का उपकरण भी यथार्थ से ही लेती है और यथार्थ को ही व्यक्त करती है। यहाँ से दो बातें निलकती हैं कि कविता यथार्थ के बिना जीवित नहीं रह सकती और दूसरी ओर यथार्थवाद के अलावा वह एक खास तरह की विचार परंपरा से भी जुड़ी हो। उसे आवश्यक मुक्ति चाहिए, कवि के अनुभव के कारण वह रूप

www.ignited.in

लेती है। इसलिए संसार के सारे कवि एक विचारधारा से प्रतिबद्ध रहते हुए भी एक जैसी कविता नहीं लिखते। स्वयं नेरुदा और ब्रेख़्त दोनों का शिल्प, विषय, भाषा आदि यानी कविता का पूरा ताना-बाना भिन्न है। इसलिए मैं यह मानता हूँ कि रचना का कहीं-न-कहीं एक ख़ास तरह की रचनात्मक मुक्ति से गहरा संबंध है और उसी मुक्ति में मेरा विश्वास है।

(क) ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्राण:

ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्राण: कवि केदारनाथ सिंह की आरंभिक कविताओं में ग्रामीण जीवन की सुगंध है। लोकधुनों की मिठास है। इन दोनों का प्रभावशाली एवं संवेदनशील समन्वय दिखायी देता है। उनके आरंभिक दौर की कविताओं में गीत अधिक लिखे गये, क्योंकि उस समय गीत अधिक प्रचलित थे। इसलिए तीसरे सप्तक में प्रकाशित उनकी कविताओं में चैदह गीत और नौ कविताएँ हैं। विश्वनाथ प्रसाद तिवारी कवि के आरंभिक दौर को याद करते हुए कहते हैं कि "केदानाथ सिंह का उदय एक गीतकार के रूप में हुआ था और 'अभी बिल्कुल अभी' संग्रह में उनका गीतकार रूप कम नहीं उभरा है। 'तीसरा सप्तक' में भी अधिक संख्या केदार के गीतों की ही है। पर इन गीतों में अनुभव की एक नयी ताजगी और भाषा की एक विशिष्ट चमक है जो उन्हें समकालीन अन्य गीतकारों से अलग करती है।

केदारनाथ सिंह के ये गीत परंपरा की पुनरावृत्ति नहीं करते, बल्कि उनके गीतों में अनुभव की एक नई ताज़गी है जो भाषा को सुन्दर बनाती है। उनका अनुभव ज़मीनी है जो प्यार और प्रकृति के अछूते रूपों को स्पर्श करता है। ऐसा अनुभव उस युग के अन्य गीतकारों में नहीं दिखायी देता है। यही कारण है कि वे समकालीन अन्य गीतकारों से अलग दिखायी देते हैं। उनकी आरंभिक कविताओं में प्रकृति और ऋतुरंग है। प्रेम का संगीत सुनायी देता है। लोकजीवन के प्रति रागात्मक संबंध की अभिव्यक्ति है। जिजीविषा का स्वर मुखरित हुआ है। केदारनाथ सिंह का ग्रामीण यथार्थ से गहरा रागात्मक जुड़ाव है। वे कहते हैं कि "मैं गाँव का आदमी हूँ और दिल्ली में रहते हुए भी एक क्षण के लिए भी नहीं भूलता कि मैं गाँव का हूँ। यह गाँव का होना कोई मुहावरा नहीं है, बल्कि इसके विपरीत मेरे जीवन की एक गहरी लगाव-भरी वास्तविकता है, जिसे मैं अनेक स्तरों पर जीता हूँ। कवि केदारनाथ सिंह ग्रामीण परिवेश के कवि हैं। लोकजीवन से उनका गहरा जुड़ाव है। इस ओर वे संकेत करते हुए स्वयं कहते हैं कि "पिछले 20-21 साल से दिल्ली में हूँ, इससे पहले गाँव से ज़्यादा निकटता थी। अब भी गाँव में जाता हूँ तो सिंपल कारण यह है कि मेरी जड़ें गाँव में हैं। मेरा यह मानना है कि रचना जिन तत्वों से बनती है उसमें रचनाकार के उन अनुभवों और स्मृतियों का बड़ा हाथ होता है जो उसने व्यस्क होने से पूर्व अपने आसन्न परिवेश से प्राप्त की थीं, ख़ास तौर से बचपन की स्मृतियाँ। मेरे लिए इन स्मृतियों का कोश मेरा गाँव है, और शायद उन्हीं स्मृतियों के साथ अपना रिश्ता ताज़ा करने के लिए गाँव जाता हूँ। इसलिए उनकी आरंभिक कविताएँ गाँव की पृष्ठभूमि से संपृक्त दिखायी देती है। जन-जीवन और प्रकृति उनके काव्य का आधार है। उनकी कविताओं में ग्रामीण परिवेश, किसानों का उल्लास-विषाद, राग-विराग की धड़कनों को सुना जा सकता है। 'धानों का गीत', 'बादल ओ', 'दीपदान', 'शामें बेंच दी हैं', 'विदागीत', 'शरदप्रात', 'दुपहरिया' आदि इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय हैं।

(ख) प्रकृति का यथार्थ चित्राण:

प्रकृति का यथार्थ चित्राण: मानव एवं प्रकृति का चिरकाल से अटूट संबंध रहा है। प्रकृति मानव की सहचरी कही जाती है। काव्य और प्रकृति का भी अद्भुत संबंध रहा है। काव्य-सृजन के आरंभ से लेकर छायावाद तक प्रकृति चित्राण को विशेष स्थान प्राप्त था। जिसका प्रभाव वर्तमान कविता में भी देखा जा सकता है। समय के साथ मानवीय मूल्यों में भी परिवर्तन आया और प्रकृति चित्राण का रूप भी बदल गया। आधुनिक युग में भौतिकवाद के वर्चस्व के कारण प्रकृति का अत्यधिक दोहन हुआ है। गाँव हो या शहर हर जगह एक-सी ही स्थिति दिखायी देती है। जिस समय केदारनाथ सिंह काव्य-सृजन आरंभ करते हैं, उस समय गाँव का प्रत्येक व्यक्ति प्रकृति से जुड़ा था। इतना ही नहीं, लगभग गाँव की समस्त आवश्यकताएँ प्रकृति से ही पूरी होती थीं। केदारनाथ सिंह एक लम्बी अवधि तक ग्रामीण परिवेश से ही जुड़े रहे। यही कारण है कि वे दिल्ली जैसे महानगर में रहते हुए भी गाँव की स्मृति को नहीं भुला पाते हैं। गाँव की नदी, तालाब, बाग़-बगीचे, जंगल, पशु-पक्षी, पुल, गाँव की फसलें, धूल आदि उनके जीवन के अंग बने रहे। जिसका प्रयोग वे अपनी कविताओं में बिंबों एवं प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त करते हैं। केदारनाथ सिंह अपने आरंभिक दौर की कविताओं में प्रकृति का अनूठा चित्राण करते हैं। उनकी कविता की शुरूआत गीतों से होती है। जो 'तीसरा सप्तक' और 'अभी, बिल्कुल अभी' में प्रकाशित हुए।

आर्थिक समस्याओं का यथार्थ चित्राणः

आर्थिक समस्याओं का यथार्थ चित्राण: केदारनाथ सिंह की कविताओं का विश्लेषण करते समय हम यह देखते हैं कि राजनेताओं में व्याप्त भ्रष्टाचार पर उनकी गहरी दृष्टि थी

www.ignited.in

और उनके विरुद्ध वे प्रतिरोध का स्वर बुलंद करते हुए दिखायी देते हैं। इसके साथ-ही-साथ देश की आर्थिक स्थिति और साधारण जनता की आर्थिक दुर्दशा से वे दुखी दिखायी देते हैं। किसानों, शोषितों की आर्थिक बदहाली का चित्राण उनकी कविताओं में बड़ी बारीकी से चित्रित हुआ है।

कवि की संवेदनशीलता इतनी विलक्षण है कि वे सूर्य के पश्चात् ज़मीन को स्थान देते हैं। वे वस्तुओं को इस रूप में संगठित करते हैं जो एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। कवि इसी कविता में कहता है कि 'ज़मीन पक रही है।' ज़मीन का पकना उसके रचनाकार्य का पोख़ता होना है। यह कविता ज़मीन की सच्चाई का बोध कराती है- "ज़मीन की महक, उसका पकना, उसकी हरकत प्रखर मानवीय सरोकारों का प्रत्याख्यान है।"[76] इसलिए कवि ज़मीन में आयी हुई दरार को सिलवाना चाहता है। सब्जी से वंचित स्त्री को सांत्वना देना चाहता है। ज़मीन पक कर इतनी कठोर हो चुकी है कि उसकी कोमलता और नरमाई ठोस वस्तु में बदल चुकी है। कवि की चिंता और आकांक्षा इन शब्दों के माध्यम से उसे पिघलाना चाहती हैं-

समीक्षा

आधुनिक हिंदी कविता में बिम्बविधान: आधुनिक हिंदी कविता में बिम्बविधान: 'आधुनिक हिंदी कविता में बिम्बविधान' नामक उनकी यह पुस्तक सन् 1971 ई. में प्रकाशित हुई, जो उनका शोध-प्रबंध है। उन्होंने सन् 1958-59 ई0 में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निर्देशन में शोध-कार्य आरंभ किया था और सन् 1964 ई0 में उनका शोध-कार्य पूरा हुआ। यह विषय हिंदी आलोचना के लिए और स्वयं केदार जी के लिए भी नया एवं चुनौतियों से परिपूर्ण था। उनसे पूर्व शुक्ल जी ने बिंब पर चर्चा की थी। "आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सन् 1929-30 के आस-पास अपने एक प्रसिद्ध निबंध में बिम्बग्रहण की पहले पहल चर्चा की थी।"[44] रामचंद्र शुक्ल के बाद प्रयोगवाद और नयी कविता के कवियों ने पुनः नये सिरे से बिंब पर चर्चा शुरू की। वे विभागाध्यक्ष के पद पर पड़रौना चले गये। उदितनारायण कॉलेज पड़रौना में उनका अध्ययन-क्रम निरंतर बना रहा। जिस कारण पूरे पड़रौना में उन्हें असाधारण लोकप्रियता प्राप्त हुई। उनकी लोकप्रियता को देखते हुए कॉलेज का प्रिंसिपल बना दिया गया। उदितनारायण कॉलेज पड़रौना से जाने के बाद वे गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर चले गये। परंतु उन्हें वहाँ का वातावरण रास नहीं आया। उन्होंने वहाँ केवल तीन माह तक ही अध्यापन का कार्य किया। 1976 ई. में वे गोरखपुर विश्वविद्यालय से जे. एन. यू. दिल्ली चले गये। वहीं से सन 1999 ई. में रिटायर हुए। यहाँ उन्होंने 23 वर्षों तक अध्यापन का कार्य किया। उनकी दक्षता को देखते हुए यू. जी. सी. ने उन्हें 'प्रोफ़ेसर एमरिटस' का सम्मान दिया। कवि केदारनाथ सिंह जब जे. एन. यू. में पढ़ा रहे थे तो उनके विद्यार्थी कक्षा में उनका इन्तज़ार किया करते थे। कक्षा में विद्यार्थियों से उनका गहरा तादात्म्य स्थापित होता था। इसीलिए प्रख्यात आलोचक नंदकिशोर नवल कहते हैं "यदि मुझे किसी प्रोफेसर का छात्रा या विद्यार्थी होना पड़े तो मैं केदारनाथ जी का होना पसंद करुँगा।

केदारनाथ सिंह जब पड़रौना के उदितनारायण कॉलेज में प्रिंसिपल थे तो वहाँ एक साम्प्रदायिक घटना घटी। किसी विशेष स्थान को लेकर दोनों पक्षों में विवाद था। इस घटना ने कवि केदारनाथ सिंह की लोकप्रियता को सिद्ध कर दिया। परमानंद श्रीवास्तव उस घटना को याद करते हुए लिखते हैं "तो जब वे पड़रौना में प्रिंसिपल थे, हिन्दू-मुसलमान संघर्ष जैसी स्थिति पैदा हुई थी। किसी जगह को लेकर विवाद था- जगह किसके हिस्से में मानी जाय। अधिकारियों ने बैठक बुलायी। जनता एकत्रा। प्रस्ताव हुआ कि हिन्दू अपनी ओर से एक प्रतिनिधि का नाम दें, गोपन रूप से। एक नाम मुसलमान भी दें, अपने प्रतिनिधि के रूप में। यह याद कर आज भी केदार जी की आँखें भर आती हैं, दोनों ने एक ही नाम दिया था केदारनाथ सिंह का नाम।"[16] केदारनाथ सिंह को इन सब परिस्थितियों ने पड़रौना से और अधिक जोड़ दिया। उन्हें उदितनारायण कॉलेज पड़रौना छोड़ने पर उतना दुःख नहीं हुआ, जितना पड़रौना शहर छोड़ने पर हुआ। इसीलिए उन्हें बार-बार पड़रौना की याद आती रहती है। जिनका उल्लेख वे 'छाता' नामक कविता में करते कवि केदारनाथ सिंह ठेठ पुरबिया गाँव चकिया से निकलकर बनारस आये। बनारस से गोरखपुर, पड़रौना, और अंत में दिल्ली में एक लंबा समय व्यतीत किया। उन्हें पूर्वांचल और महानगर दिल्ली में एक तीव्र अनुभूति का एहसास होता है। है। उनके काव्य में संवेग और संवेदन तंतुओं की बनावट है। उसमें रूप और आकारधर्मिता भी है। उनका काव्य-दृश्य एक नाटकीयता के लिए है। उनके काव्यात्मक कथानक में प्रश्नाकुलता है। कौतुक और कौतूहल विद्यमान है। उनके तर्क़ ही उनकी काव्य संवेदना की पुष्टि करते हैं। उनके काव्य में वह लयात्मकता है जो एकाएक दृश्य-बंधों के बीच स्मृति से चमकते सघन बेआवाज़ अँधेरे को मिटाकर सहसा प्रकाश में बदल देती है। उनके काव्य का यथार्थ एक नये ढंग से रंग भरता हुआ दिखायी देता है। उनकी भाषा शक्ति यथार्थ को नाटकीय रूप में चित्रित करती है।

केदारनाथ सिंह अपने काव्य में सामाजिक सच्चाई और भोथरी व्यवस्था का पर्दाफाश करते हैं। वे वर्तमान सामाजिक व्यवस्था से संतुष्ट नहीं हैं। वे प्रश्नों के माध्यम

www.ignited.in

से समाज के समस्त वर्गों एवं वस्तुओं को समान अधिकार दिलाने का प्रयत्न करते हैं। प्रश्न ही उनकी कविता की ताक़त बनते हैं। वे समाज से लगातार प्रश्न करते हुए दिखायी देते हैं। उनके प्रश्न समाज को सुखी एवं आनंददायक बनाने के लिए हैं। कवि ने समाज की इस सच्चाई को यथार्थ के धरातल पर कसने का प्रयत्न किया है। कवि केदारनाथ सिंह का संपूर्ण काव्य-लेखन सामाजिक यथार्थ से ओत-प्रोत है। वह अपने काव्य-लेखन के माध्यम से निरंतर लोक-जीवन से जुड़े रहे हैं। उनके काव्य में मानव-समाज के आंतरिक एवं बाह्य तत्वों का समन्वित यथार्थ झंकृत होता दिखायी देता है, जिसे सामाजिक यथार्थ का मूलाधार कहा जा सकता है। मानव अपनी चेतना के द्वारा सामाजिक व्यवहारों का ज्ञान अर्जित करता है। इन्हीं तत्वों को आधार बनाकर कवि केदारनाथ सिंह को लोक-जीवन का कवि कहा जाये तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी, क्योंकि लोक-जीवन के यथार्थ को अभिव्यक्त करने वाला कवि लोक की मिटटी का गायक एवं वाहक होता है। उसकी रग-रग में लोक-जीवन का परिवेश और वहाँ की गंध समाहित होती है। कवि इस गंध को साहित्य में पिरोता हुआ नज़र आता है। कवि केदारनाथ सिंह ने जिन-जिन स्थानों का भ्रमण किया वह उनके काव्य का अंग बन गए। वे जिन स्थानों और जिन व्यक्तियों से प्रभावित हुए उन्हें अपने काव्य में स्थान दे दिया।

उपसंहार

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसका अस्तित्व समाज में निहित है। उसकी समस्त आवश्यकताएँ समाज से पूरी होती हैं। उसके व्यक्तित्व का सर्वोन्मुखी विकास यथा-सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, प्राकृतिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक आदि समाज में रहकर ही पूरा हो सकता है। इन समस्त चीज़ों के अतिरिक्त मानव समाज की एक महत्त्वपूर्ण इकाई है। प्रत्येक इकाई का स्वयं का अस्तित्व होता है। इस प्रकार मानवीय यथार्थ सामाजिक यथार्थ का मूलाधार है। इसलिए उसे हम रीढ़ की हडडी की संज्ञा दे सकते हैं। समाज में विभिन्न प्रकार के लोग निवास करते हैं। उन समस्त लोगों की सामाजिक चेतना एक समान नहीं हो सकती है। सामाजिक यथार्थ में विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक एवं आत्मिक घटनाएँ निहित होती हैं, जिनमें मानवीय भावनाओं, अनुभवों एवं मुद्राओं से लेकर सामाजिक जीवन के संपूर्ण सारतत्व को बाँधने वाले सिद्धांतों एवं सामाजिक विकास की दिशा एवं प्राकृतिक घटनाओं को सम्मिलित किया जा सकता है। इन सभी प्राकृतिक एवं आत्मिक घटनाओं द्वारा समाज के यथार्थ को प्रतिबिंबित किया जा सकता है। मानव अपने नैतिक जीवन में भौतिक रूप से अनेक अंतर्विरोधों का सामना करता है। प्रगतिशील विचारक इन समस्याओं का समाधान ढूँढ़ते हुए दिखायी देते हैं। उनके द्वारा ही समाज के समक्ष प्रस्तुत समस्याओं का समाधान होता दिखायी देता है। प्रगतिशील विचारधारा में श्रमिक एवं शोषित वर्ग का विशेष ध्यान रखा जाता है। यह विचारधारा शोषित, पीड़ित, दमित, कुंठित एवं श्रमिकों के वास्तविक हितों की रक्षा के लिए तत्पर रहती है। यह कार्य व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक दोनों रूपों में होता है। सामाजिक चेतना द्वारा सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्त करने के लिए विभिन्न विचारधाराओं, दृष्टिकोणों, सिद्धांतों, धारणाओं एवं भावनाओं के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है। केदारनाथ सिंह प्रगतिशील कवि, नागार्जुन, त्रिलोचन शास्त्री, केदारनाथ अग्रवाल की भांति ज़मीनी कवि हैं। बिंब-धर्मी कवि होने के कारण उनका ज़मीनी रिश्ता उन कवियों से अलग है। उनके काव्य परिदृश्य में चित्रों के साथ-साथ चरित्रा को भी देखा जा सकता है। कवि की संवेदना एवं अनुभव का ही परिणाम है कि 'कुदाल' नामक कविता में चित्रा और चरित्रा दोनों एक साथ खड़े दिखायी देते हैं। वे धैर्य एवं संयम के साथ अपने काव्य में तर्क को प्रस्तुत करते हैं। उनके तर्क संभवतः तंत्रा की भांति प्रयोग में लाये जाते हैं। उनके काव्य में भाव-बोध को प्रगतिपरक तत्व के रूप में देखा जा सकता है जिस कारण उनके काव्य में एक भभक, लचक और धुँधले में चमकती हुई लकीर देखी जा सकती है। केदारनाथ सिंह अपने काव्य में जीवन में व्याप्त विडंबनाओं को पहचानने में सजग एवं सचेत दिखायी देते हैं जिस कारण उनके काव्य में एक कौंध भरी हलचल को महसूस किया जा सकता है। उन अनुगूँजों के माध्यम से उनकी संवेदनशीलता को जाँचा एवं परखा जा सकता है। कवि केदारनाथ सिंह समकालीन कवियों में अग्रणी स्थान रखते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, केदारनाथ: जो शिलाएँ तोड़ते हैं, इलाहाबाद, परिमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1986
2. अमिताभ, वेदप्रकाश: हिंदी कविता आधुनिक और समकालीन, मथुरा, गोविन्द पचैरी, जवाहर पुस्तकालय, प्रथम संस्करण, 2014
3. अमरनाथ: हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन, दूसरी आवृत्ति, 2015

www.ignited.in

4. अज्ञेय: तारसप्तक, नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, ग्यारहवाँ संस्करण, 2014

5. वही: दूसरा सप्तक, नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, चैथा संस्करण, 2012

6. वही: तीसरा सप्तक, नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दसवाँ संस्करण, 2013

7. कुमार, विजय: सदी के अंत में कविता, शाहदरा दिल्ली, उद्भावना प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1998

8. कृष्ण, भावुक: अज्ञेय की काव्य-चेतना, नई दिल्ली, अशोक प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1972

9. गुप्ता, दुर्गा प्रसाद: हिंदी में आधुनिकतावाद, दिल्ली, अनंग प्रकाशन, प्रथम संस्करण-1988

10. चतुर्वेदी, रामस्वरूप: हिंदी काव्य का इतिहास, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण, 2012

11. जैन, नेमिचन्द्र: मुक्तिबोध रचनावली-1, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1980

12. तिवारी, विश्वनाथ प्रसाद: आधुनिक हिंदी कविता, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1980

Corresponding Author

Renu Mittal*

Assistant Professor, RKSD College, Kaithal, Haryana